7 P
176
Н

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1350/10/14

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 176 96

891.431
Ar 4c

(T)
1211

891.431
An4c

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

हिन्दी में अनुवाद [illegible]

[illegible]

मूल्य [illegible]

IMPERIAL RECORD
RECEIVED
30 MAR. 1931
DEPARTMENT

भजन नं० ९

[illegible] अनमोल नाम तुम्हारा है ।
[illegible] गोद बिठाके तू पालन करे हमारा है ॥

[illegible] शीश झुकाऊं मैं ।
[illegible] तेरे भला यहां [illegible] मैं ॥

[illegible] [illegible] प्यारा है ।
[illegible] गोद बिठा कर के तू पालन करे हमारा है ॥

[illegible] कोई [illegible] नहीं ।
[illegible] खुशी से गावें कोइल कूके डार कहीं ॥

[illegible] जिसका पारावार है ।
[illegible] पालन करे हमारा है ॥

[illegible] और [illegible] ब्रह्मचारी ।
[illegible] धनुष धारी ॥

[illegible] गंगा बहता है ।
[illegible] गोद [illegible] तू पालन करे हमारा है ॥

[illegible] मिल जाता है ।
[illegible] मिल जाता है ॥

"[illegible]" [illegible] है ।
[illegible] गोद बिठा कर के तू पालन करे हमारा है ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
176
8.1.57
GOVT. OF INDIA

गज़ल

पीछे हो देर जाइके अब ठिकाना देखलो ।
हो गया आज़ाद भारत यह ज़माना देखलो ॥
अब कदम जमते नहीं खुलासयें के हिन्द में ।
होती अब है फ़िकर अब आशियाना देखलो ॥
आपनेही जुल्मोंसे तुमने हमको दी आज़ादियां ।
औरसे बेमाल भागा आशियाना देखलो ॥
तुम खड़े हैं सामने रस्ता है पीछे को हराम ।
हाथ में बन्दूक ले सीना निशाना देखलो ॥
इम्तहां आज़ादी लेनेका तुम्हें करना है गर ।
फेर लेवें के कहो और कम निशाना देखलो ॥
देखलो इनसाफ़ जालमडायर का पंजाब पर ।
लार्ड रीडिंग हुकमसादिर व शिवाना देखलो ॥
ऐसे जिन्दादिलों के तुमको ऐसे याद अब ।
आयेगा रोना हमारी लाश खाना देखलो ॥

गज़ल

(तर्ज़-कहरहे हैं कराचि के कैदी ।)

धारती अपनी कौमी बनाकर ॥

लेंगे स्वराज्य ससुराल जाकर ।

अबतो चमका मुकद्दर हमारा ॥

रंज गम दूर होगा हमारा ।

नारा वन्देमातरम लगा कर ॥ लेंगे० ॥

डर नहीं जेलखाने से हम को ।

काम मतलब बुराई से हम को ॥

जाते हैं जेल खुशियाँ मनाकर ॥ लेंगे० ॥

जेलखाना है ससुराल का घर ।

घरसे ससुराल के भागेका भर ॥

सर पर दुश्मन के डंका बजा कर ॥ लेंगे० ॥

हमतो जाते हैं अब तुम सम्भालो ।

काले भाई की सुनो न कालो ॥

मेरा झण्डा गड़े है मिटाकर ॥ लेंगे० ॥

जेल जाना है ससुराल सब को ।

जब हैं जाकर के पीसेंगे चक्की ॥

नाम जिन्दों में अब हम लिखा कर ॥ लेंगे० ॥

मर्द मैदान है गांधी जी का ॥
और किचलू व जफर अली का ।
हुकम गांधी जी का बजाकर ॥ लेंगे० ॥
जेल खाने का कुछ डर नहीं है ।
फांसी पाने का कुछ गम नहीं है ॥
हमतो दुश्मन का बेड़ा डबोकर ॥ लेंगे० ॥
या इलाही हमें जो सतावे ।
चैन दुनयां में हरगिज न पावे ॥
सरी रहमत को हमराह लाकर ॥ लेंगे० ॥

एक साहिब का जबानी बयान

अब क्या करूं सब उड़ाले रहे होश और दिल ।
शोक चाई माई डियर हायें हायें फिस ॥
अबतक तो इण्डिया था मैं बन रहा गुलाम ।
करता था एक रोज़ों में हमारे तीन काम ॥
गांधीने पिला दिया स्वराज का जो जाम ।
करने लगा अबतो यह उलटे ही सलाम ॥
यह देख कर होता है हमारी अकल मिस गोल० ।
कचहरी बनी थी न कैद खाना बनाया ॥

इण्डियन की ज़बां बन्दीन का खज़ाना होगयो ।

जो मज़ ा उसके लिये वह आडर ठन गया ॥

पर यहां तो हर बशर ही मरने पे मन गया ।

अब क्या कहूं सब जाते रहे होश और हि़श ॥ बोल० ॥

अब बड़ा दिन आया मेवे के लाओ थाल ।

ना ील न बआइ तो भी ठेल दुंगा डाल ॥

परवा नहीं है गर खिंचलोगे हमारी खाल ।

फ़ूटा बदाम को ठेलले मेरी मजाल ॥

यह सुनकर सारी अकल गई घिस ॥ बोल० ।

पहले यहां बिकता था आटा एक मन ॥

खा खा के मोटा होगया हरएक मर्द व ज़न ।

चौसेर अब ही कर दिया भूके मरें इण्डियन ॥

रोटी के रहें मोहताज़ दुबला रहे बदन ।

यह होशियार बनगये पानी सो गोई मिस बोल० ॥

जारी किये कनून बढ़ा माया ख़ुश था ।

थी पहले दर्द मिडल की अब फ़ेल की लगादी ॥

फिक न थी ई महकमों मे हमने बढ़ा दी ॥

हर तरहसे बात अपनी हमने खूब जमादी ॥

पर यह न हुए ज़रा भी हिस और मिस बोल०

दफतर खोले बना दिये इंचारज अफसर॥

कुछे बहुत वकील बनादिये हजारों बैरिस्टर ।

समझते थे रहेंगे यह हमारे हमसर ॥

सारी शकल बंदर की सिर्फ दुम की कसर ।

यह होगये अवतार कहैं कौन और किस बोल० ॥

जो वार्शहिपर होवे गिरफ़तार उसे करो ।

यह फ़ौज़ जुरम लगादी इसी हुकम को सुनो ॥

बेरहम सरकार के हमदम तुम बनो ।

यह सोचे नहीं सुनले तुम बात मत करो ॥

यह बन गये उस्ताद और हम रहे शिष बोल० ।

सोते थे लेकर तान कर हम हिन्दोस्तान में ॥

गैरों के गम रहते थे दुनियां जहान में ॥

अफसोस यह फूँक दिया गांधी ने कान में ।

सलीहा यह किस तरह समाया इसके ध्यान में ।

कर दिया इसने तो यूरोप को भी फ़िक्र बोल० ॥

पहले था उरूज पर हमारा सितारा ।

होम रूलने डुबा दिया इकबाल का तारा ॥

हाथ मलके रहेगा अब इंगलैन्ड बिचारा ।

यह चरखा क्या निकाला मनहूस हत्यारा ॥

चरखे ने अक्ल चरादी अब हुई सब मिस ।

बोल गई भाई डियर टायें टायें फिस ॥

गजल नं० २

बाँध ले बिस्तर फिरंगी राज अब जाने को है।
जुल्म काफी कर चुके मुल्क बिगड़ जाने को है॥
गोलियाँ तो खा चुके तोप भी हम देख लें।
सर गिरेंगे मुल्क पर फिर इंकलाब होने को है॥
वीर जवाहर जेल में हैं कौम के वह ना खुदा।
जेल खाना तोड़ देंगे यह हवा चलने को है॥
कह रहे हैं बाबा गांधी मान लो शर्तें तमाम।
वरना फिर नक्शा हकूमत का पलट जाने को है॥
आगये पटेल भी अब कार आरे जंग में।
देख लेना राज शाही बेनकाब होने को है॥
लिख दई गांधी ने चिट्ठी आखरी पंजुम के नाम।
अब समझ जा तू फिरंगिया वरना सिक्का मिटने को है॥
आज़ादी ने वार अपना कर दिया इंग्लैंड पर।
देखना अब मानचेस्टर भी उजड़ जाने को है॥

लड़ा खद्दर का झगड़ा (पंजाबी तर्ज)

मुड़ नहीं आना खद्दर पे मेरो बीना मरोड़।
मैं लट्ठा छुन तैनू नहीं छुडना-ना भावें दम तक छुन सकुना।
तो फसलां कढ़ना लठ्ठा पांगिया तेरा मेरा जोड़॥
क्यों लावे देश लट्ठा ने जागा मुल्क कल मोड़॥ मुड़०॥

खद्दी—आया पार समन्दरों विलायती। मेरा यूरुप कोली लिआयन्दी। ते सस्ता विकायन्दी खद्दर वे मेरी सब नूं है लोड़ ॥ मुड़० ॥

खद्दर—मल चरबी तू मुह चमकाया। सब लोकां दा धर्म डुबाया। तैने यह हिन्द कंगाल कराया मद्दा छूटे साड़ किरोड़ ॥ मुड़० ॥

मद्दा—मेरा चाकीदा लारका सजदा। तन पे छोटा बड़ा सजदा ते लोग प्यार करदे खद्दरा वे मेरी सब नूं है लोड़ ॥ मुड़० ॥

खद्दर—तेरा मारका मशीं थे चालया। पते हिन्दियां सचाकी दियां चाखियां। ते किता खपदियां। सद्दुया वे लिया साड़ किरोड़ ॥ मड़० ॥

मद्दा—लहू वाले कुर झि ां दे उरों खेलदे। यार खद्दर दे रौसके विच जेलदे। ते दुखपये भैंजदे। खद्दर वे सद्द, भूला लिखोड़ ॥ मुड़० ॥

खद्दर—तैनू पान वाले कोली चुकदे। देख खद्दर उन्हां दे सुमदे। तेहुन परे लखदे। देखन आली ओनूं खोल ॥ मुड़० ॥

मद्दा—मैं सांझा तैं चिट्टा छैला। तूं चनपेंड दीआई मैला। है धड़ी विचे कुचैला। खद्दरा मेरा सब नूं है लोड़॥ मुड़० ॥

खद्दर—मैंस सुइयाँ नूं छेदी गई। तेरी गल नहीं
फबदी। ते मशीन रखदी। लठ्या वे छिटया ते हुं बाहं।
कांड॥ मुड़०॥

लठ्ठा—करके जुल्म मैं तैनूं मुकावाँ। नाले मशीनगना दी चला
वाँ। ते देर न लगावाँ। खद्दर वे तू पान नहीं मेरे कोल॥
मुड़०॥

खद्दर—गांधी जंग अमन दे रचाया। चरखा चक्कर सुदर्शन
चलाया। तैनूं पलांविच मार मुकाया लठ्ठया वेखे नेहो
लोकां दी लोड़०॥

लठ्ठा—मेरे प्यारे हिन्दी दुख सहेंगे। मुर्दियांविच कदतां नंगे र-
हैंगे तेथुया तेनू कहेंगे। खद्दरा वे मैनूं फिकर न होर॥
मुड़०॥

खद्दर—मेरे प्यारे हिन्दी सुखी रहेंगे मुर्दे हो जिन्दा राज करेंगे
ते ते ऊ कहेंगे कढठआवे हथनूं गांधी नूं ओड़॥
मुड़०॥

लठ्ठा—तू जीता मैं हारया। मुड़ नहीं आवना देर प्यारा ते।
हिन्दुस्तान हारया। खद्दरा वे भूलतेकर न फेर कुन रोष॥

खद्दर—लठ्ठया पूरबवे विच जाके। गाँधी जी दी जै बुलाके।
सबनूं आखया ऐ सुनाके तेरी नहीं हिन्दनूं लोड़ मुड़०॥

शहीदों का सन्देश

दिल खून का हमारे प्यारो। न भूल जाना।

खुशियों में अपनी इन पर आंसू बहाते आना ॥
सैय्याद ने हमारे चुन चुन के फूल तोड़े ।
वीरान इस चमन में अब गुल खिलाते आना ॥
गोलों को खाके सोये जलियान बाग़ में हम ।
सूनी पड़ी क़ब्र पर दीया जलाते आना ॥
हिन्दू औ मुसलिमों की दामन भिगोते आना ।
बहने हमारे रंगमें दामन भिगोते आना ॥
कुछ क़ैद में पड़े हैं हम क़ब्र में पड़े हैं ।
दो बूंद आंसू इन पर प्यारे बहाते आना ॥

अच्छे दिन आने वाले हैं

ऐ मादरे हिन्द न हो गमगीन अच्छे दिन आने वाले हैं ।
आज़ादी का पैग़ाम तुझे हम जल्द सुनाने वाले हैं ॥
मा तुझको जिन जल्लादों ने दी है तकलीफ़ अज़ीयत में ।
मायूस न हो मक्कारों को हम मज़ा चखाने वाले हैं ॥
कमज़ोर हैं और मुफ़लिस हैं हम आफ़त भी पर काले हैं ।
बेकस लाख मगर माना हम आफ़त के पर काले हैं ॥
हिन्दू और मुस्लिम मिल कर के चाहें जो हम कर सकते हैं ।
ऐ चर्ख़े कुहन हुशियार हो तू पुरशोर उभारे वाले हैं ॥
बेरी मद को करना जेर क़ातिल इस नाम से वाक़िफ़ है उनके ।
आज़ाद ए अपना दिल शैदा जो जान ज़ुबां पर वाले हैं ॥

मग़लूब जो हैं होंगे ग़ालिब महकूम जो हैं होंगे हाकिम ।
सदा एकसा वक्त रहा किसका कुदरत के तौर निराले हैं
गान्धी ने तर्क नाआर्डन का यह कैसा मंत्र चलाया है ।
लरजां हैं जिससे अर्जोसमां सरकार की जान के लाले ॥

गजल

चरखा नहीं है भाईयों यह चक्र है भगवान का ।
शुभ सर्वथा साधन यही है देश के उत्थान का ॥
चरखा बिना यह देश चरखा हो रहा है सर्वथा ।
देखी नहीं जाती यहां अब देश की दुस्तर व्यथा ॥
चिकन मलमल जो रही प्रसिद्ध ढाके की सदा ।
आगिल बुरी भी धोतीयां प्रख्यात थीं यहां पर सदा ॥
जो लोईयां अरु पट्टियां कशमीर में बनती रहीं ।
कम ख्वाब साटन में नहीं काशी की समता थी कहीं
परमात्मा साखी रहे यह बात भी धारण करो ।
अब स्वच्छ देशी सूत देशी का सभी धारण करो ॥
भूखे रहें भूखा मरें अरु प्राण बहु देना पड़े ।
परमात्मन तो भी विदेशी वस्तु नहीं लेनी पड़े ॥
प्रचार चरखे का करो भारत निवासी प्रेम से ।
नर नार सब चरखे चलावें नित्य ही शुभ नेम से ॥
इस चक्र चरखे से कभी दुशमन बच सकता नहीं ।
सत्कर्म अरु शुभ शांतिसा शस्त्र क्या होगा कहीं ॥

जो दुख खिलाने में मरे तो चीख न देना चाहिये ।

सुख शांति से स्वाधीनता पद हस्तगत लेना चाहिये ॥

विनती हमारी की यही है देश भारत वर्ष से ।

चरखा चलाने में लगें नर नारियां सब हर्ष से ॥

गजल

अगर आजाद गैरों से मेरा हिन्दोस्तां होगा ।

तो हर एक नौजवां खुशहाल सतयुग का समां होगा ॥

अगर अफ़सोस अफ़सूं है गुलामी में मेरा भारत ।

वह दिन अब जल्द आता है कि अपना राज यां होगा ॥

कहेंगे फिर नहीं अखबारों में मारे भेड़ बकरों से ।

न रौलट एक्ट ही होगा न गैरों का निशां होगा ॥

न होगा मार्शल ला भी अगर आजाद हम होंगे ।

इसी भारत में फिर अर्जुन सा हर एक नौजवां होगा ॥

खुशी से जान भी जाये मगर ईमान रह जाये ।

हमें होगी खुशी जब ही हमारा यूं खां होगा ॥

ये हिन्दी हिन्द के वासी नहीं तोपों से डरते हैं

भला कब तक हमारी ये जमीं और आसमां होगा ॥

महात्मा सत्य गांधी ने चलाया चक्र चर्खे का ।

इसी से गैर के अन्याय का बस खातमां होगा ॥

फलेंगे और फूलेंगे हमारे बाग के बूटे ।

पटेल और जवाहर सा हमारा बागवां होगा ॥

रसिया

प्रीतम चलूं तुम्हारे संग जंग में पकडूंगी तलवार ।
भारत को आज़ाद करूंगी नहीं जेलन से बालम डरूंगी ॥
मारूंगी बैरन की गर्दनी करूं खतम तैयार ।
प्रीतम चलूं ०

चरखे की मैं तोप बनाऊं बना सूत के गोले चलाऊं ।
सामराज्य के किले को ढाऊं पाऊं फतह अपार ॥
प्रीतम चलूं ०

गांधी जी का हुक्म चलाऊं घर घर में उपदेश सुनाऊं ॥
अपनी बहनों को समझाऊं करूं खूब प्रचार ॥
प्रीतम चलूं ०

नहीं पीछे को कदम हटाऊं नहीं माता का दूध लजाऊं ।
रजपूती का हुनर दिखाऊं कम पाओं धिक्कार ॥
प्रीतम चलूं ०

अपना पहनूं कता सुदेशी नहीं खरीदूं माल विदेशी ।
मुलाहज करेंगे सब परदेशी हुआ गरम बाजार ॥
प्रीतम चलूं ०

गाढ़े के सब वस्त्र बनाओ खादी पब्लिक को पहनाओ ।
और मैं करूं सूत तैयार ॥ जंग में० ॥

चाल दुखावे और आंख ॥ टी०

गज़ल नं० ६

नहीं पीनी नहीं पीनी शराब आलिम नहीं पीनी ।
वेद कुरान व जौल पुकारें, है ये बड़ी ख़राब, आलिम नहीं पीनी
कोई धर्मइसे भला कहेना, बुरा करे [illegible], आलिम नहीं०
पी बेहोश पड़े नाली में, कुत्ते करें पेशाब, आलिम नहीं पीनी
रण्डी के घर जाय शराबी, औंधा पड़ा [illegible], आलिम नहीं०
कुत्ते मूंह चाटें [illegible] में, मक्खी का [illegible], आलिम नहीं
कुल बिगड़ जाय [illegible] जानें, [illegible] आब, आलिम नहीं०
[illegible] पे गिरे शराबी, [illegible] मिले [illegible], आलिम नहीं०
[illegible] मूल इसे मत पीना, चाहे [illegible] मिले [illegible] आलिम०

टिड्डी और [illegible] नं० ७

किये हैं तावत और [illegible] आर टिड्डी ने ॥
कहाँ के लाखों [illegible] टिड्डी में
[illegible] है [illegible] रंगी को ॥
[illegible] और [illegible]
किसानों पर [illegible] है [illegible] पे [illegible]
[illegible] है [illegible] है [illegible] है ॥
[illegible] रहे [illegible]
[illegible] के [illegible] है [illegible]
[illegible] इक [illegible]
जो टिड्डी [illegible] कहीं [illegible] है [illegible]
हवा में उड़ नहीं सकता [illegible] पर ही [illegible] है
यह हिन्दुस्तान के [illegible] पापों का [illegible] है

यह [illegible] के [illegible]
यह [illegible] काम वीरों के दिलों में [illegible]
यह [illegible] है पतन के [illegible]
हमें अपनी [illegible] में [illegible] कहते हैं [illegible]

मुबारिकबाद ।

है धन माता वो जिसने जन्म दिया था [illegible] तुमको ।
किया जो आपने काम मरदाना मुबारिक हो ।
वतन के वास्ते छोड़ा है [illegible] का ।
[illegible] मुबारिक हो ।
तुम्हें [illegible] के [illegible] हैं [illegible] में देख सकता है ।
[illegible] मुबारिक हो ।
[illegible] है [illegible] ।
[illegible] मुबारिक हो ।
है [illegible] ।
[illegible] मुबारिक हो ।
हुआ पूरा है 'हाद' को [illegible] जग में ।
[illegible] मुबारिक हो ।

पता—भारत बुक एजेन्सी नई सड़क दिल्ली